प्रारंभिक परीक्षा

सांपों का विकासवादी वृक्ष(EVOLUTIONARY TREE OF SNAKES)

संदर्भ

हालिया जीवाश्म खोजें और आधुनिक आनुवंशिक अध्ययन वैज्ञानिकों को सांपों की विकासवादी उत्पत्ति और सरीसृप विकासवादी वृक्ष में उनकी स्थिति का पता लगाने में मदद कर रहे हैं।

सांपों का विकासवादी वृक्ष

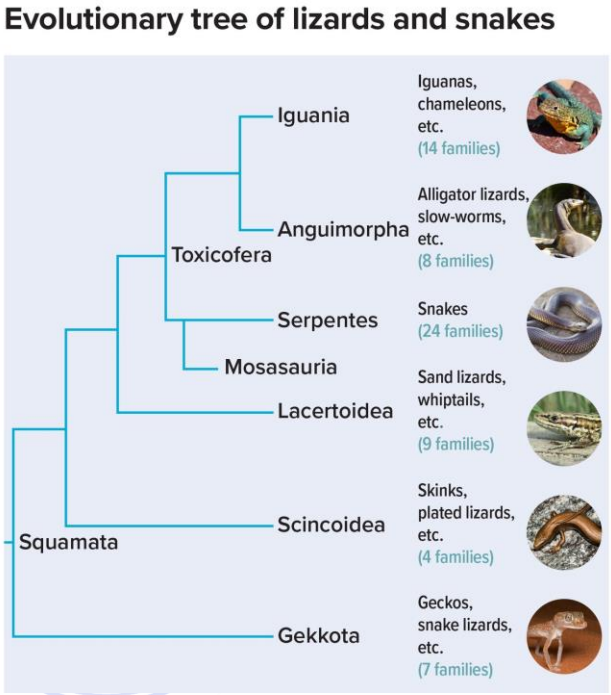

- **सांपों की उत्पत्ति:** वैज्ञानिकों का अनुमान है कि पूर्वज सांपों का उदय डायनासोर युग (सरीसृप गण 'स्क्वैमाटा' (Squamata) के अंतर्गत) के दौरान लगभग 160 मिलियन वर्ष पहले हुआ था।
- **निकटतम विकासवादी संबंधी:** सांप सरीसृप क्लेड 'टॉक्सिकोफेरा' (Toxicofera) से जुड़े हुए हैं, जिसमें मॉनिटर छिपकली, इगुआना और जहरीली छिपकलियाँ शामिल हैं।
- **सांपों की उत्पत्ति पर बहस:** वैज्ञानिक इस बात पर बहस करते हैं कि क्या शुरुआती सांपों का विकास भूमिगत बिलों, समुद्री वातावरण या स्थलीय रेतीले आवासों में हुआ था।
    - पाटागोनिया से प्राप्त नए जीवाश्म साक्ष्य बताते हैं कि सांपों का विकास संभवतः स्थलीय या अर्ध-बिलकारी (semi-burrowing) वातावरण में हुआ था।
- **महत्वपूर्ण संक्रमणकालीन जीवाश्म:** *नजाश रियोनेग्रिना* (Najash rionegrina - 95 मिलियन वर्ष पुराना) और *डिनिलिसिया पाटागोनिका* (Dinilysia patagonica - 80 मिलियन वर्ष पुराना) जैसे जीवाश्म शुरुआती सांपों के विकास के बारे में सुराग प्रदान करते हैं।
- **अंगों का विलुप्त होना:** सांपों ने धीरे-धीरे लंबे शरीर विकसित किए और 150-125 मिलियन वर्ष पहले अपने अंग खो दिए, जिससे बिल खोदने और रेंगने की दक्षता में सुधार हुआ।

INCOIS ने 'कल्लाक्कदल' (KALLAKKADAL) के बढ़ते खतरों से निपटने के लिए तटीय बाढ़ निगरानी का विस्तार किया

संदर्भ

भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS) ने "कल्लाक्कदल" स्वेल सर्ज (swell surge) घटनाओं के पूर्वानुमान में सुधार के लिए कोल्लम हार्बर के पास दूसरा तटीय बाढ़ निगरानी तंत्र (CFMS) स्थापित किया है।

कल्लाक्कदल सर्ज (Kallakkadal Surges) के बारे में

- **अर्थ:** "कल्लाक्कदल" का तात्पर्य दक्षिणी हिंद महासागर में दूर स्थित तूफानों द्वारा उत्पन्न उच्च-ऊर्जा वाली स्वेल लहरों(swell waves) के कारण आने वाली अचानक तटीय बाढ़ से है।
- **कारण:** दक्षिणी हिंद महासागर में लगभग 10,000 किमी दूर उत्पन्न लंबी अवधि की समुद्री स्वेल लहरों द्वारा प्रेरित।
- **वैज्ञानिक आधार:** खुले महासागर में छोटी लहरों के बीच अंतःक्रिया के माध्यम से बनने वाली निम्न-आवृत्ति 'इन्फ्राग्रैविटी' (infragravity) लहरों से संबद्ध।
    - **शोलिंग प्रभाव (Shoaling Effect):** गहरे जल से उथले जल की ओर बढ़ने पर लहरों की ऊंचाई बढ़ जाती है।
    - **तटीय बाथमीटरी (Bathymetry) की भूमिका:** जल के नीचे की स्थलाकृति तट के पास तरंग ऊर्जा को प्रवर्धित करती है।
- **लहरों की विशेषताएं:** ये लंबी अवधि की स्वेल लहरें होती हैं जिनकी अवधि 30-300 सेकंड के बीच होती है।
- **भारत में संवेदनशील क्षेत्र:** भारत का दक्षिण-पश्चिमी तट, विशेष रूप से केरल, प्री-मानसून सीजन (फरवरी-मई) के दौरान अत्यधिक संवेदनशील है।
- **प्रभाव:** यह मछली पकड़ने वाले समुदायों, बंदरगाहों, तटीय बुनियादी ढांचे और निचले इलाकों की बस्तियों के लिए खतरा उत्पन्न करता है।

तटीय बाढ़ निगरानी तंत्र (Coastal Flood Monitoring System - CFMS):

- यह एक निगरानी प्रणाली है जो वास्तविक समय में तटवर्ती तरंग परिवर्तन और तटीय जल-स्तर के परिवर्तनों को ट्रैक करने के लिए मौसम केंद्रों और उथले पानी में उच्च-आवृत्ति दबाव सेंसरों को एकीकृत करती है।
- पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) के तहत INCOIS द्वारा विकसित और संचालित।
- **CFMS के स्थान:** पहला CFMS विझिंजम में स्थापित किया गया था और दूसरा कोल्लम हार्बर के पास।
- **CFMS का महत्व:** यह प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को सुदृढ़ करता है, पूर्वानुमान की सटीकता में सुधार करता है और तटीय आपदा तैयारी एवं लचीलेपन को बढ़ाता है।

कोयला गैसीकरण योजना (COAL GASIFICATION SCHEME)

संदर्भ

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने कोयला गैसीकरण को गति देने के लिए ₹37,500 करोड़ की कोयला गैसीकरण योजना को मंजूरी दी है।

योजना के बारे में

- **उद्देश्य:** सतही कोयला गैसीकरण को बढ़ावा देना और यूरिया, मेथनॉल, अमोनिया, उर्वरक और सिंथेटिक नेचुरल गैस (SNG) जैसे सिनगैस (syngas) आधारित डाउनस्ट्रीम उत्पादों के उत्पादन का समर्थन करना।
- **लक्ष्य:** भारत का लक्ष्य 2030 तक 100 मिलियन टन (MT) कोयले का गैसीकरण करना है, जिसमें यह योजना लगभग 75 MT योगदान का लक्ष्य रखती है।
- **योजना के तहत प्रोत्साहन:**
    - **वित्तीय प्रोत्साहन:** पात्र परियोजनाओं के लिए संयंत्र और मशीनरी लागत के 20% तक वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
    - **परियोजना-वार प्रोत्साहन सीमा:** प्रति परियोजना अधिकतम प्रोत्साहन ₹5,000 करोड़ पर सीमित है, जबकि SNG और यूरिया-आधारित परियोजनाएं ₹9,000 करोड़ तक प्राप्त कर सकती हैं।

- **इकाई-वार प्रोत्साहन सीमा:** एक एकल इकाई सभी श्रेणियों में अधिकतम ₹12,000 करोड़ का लाभ उठा सकती है।
- **कोयला लिंकेज सुधार:** योजना निवेशकों के लिए दीर्घकालिक निश्चितता प्रदान करने हेतु सिनगैस/कोयला गैसीकरण परियोजनाओं के लिए कोयला लिंकेज की अवधि को 30 वर्ष तक बढ़ाती है।

- **संबंधित पहल:** यह राष्ट्रीय कोयला गैसीकरण मिशन और पहले की ₹8,500 करोड़ की प्रोत्साहन योजना (2024) पर आधारित है।
- **योजना की आवश्यकता:** भारत मेथनॉल (80-90%), अमोनिया (लगभग पूर्ण निर्भरता), LNG, यूरिया और कोकिंग कोल जैसे उत्पादों के लिए उच्च आयात निर्भरता रखता है। (वित्त वर्ष 2025 में इनके लिए भारत का आयात बिल लगभग ₹2.77 लाख करोड़ था)।

कोयला गैसीकरण:

- ऑक्सीजन, भाप और हवा के साथ नियंत्रित प्रतिक्रिया के माध्यम से कोयले को सिनगैस (संश्लेषित गैस) में परिवर्तित करने की प्रक्रिया।
- कोयला गैसीकरण को प्रत्यक्ष कोयला दहन की तुलना में अपेक्षाकृत स्वच्छ माना जाता है और यह स्वच्छ औद्योगिक ईंधन संक्रमण का समर्थन कर सकता है।

प्रौद्योगिकी और कानूनी सुधारों के माध्यम से सड़क सुरक्षा को मजबूत करना

संदर्भ

उच्चतम न्यायालय ने सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को कम करने के लिए सार्वजनिक परिवहन में स्पीड गवर्नर, ट्रैकिंग डिवाइस और पैनिक बटन अनिवार्य करके केंद्रीय मोटर वाहन (CMV) नियमावली, 1989 को कड़ाई से लागू करने का निर्देश दिया है।

वाहन सुरक्षा उपकरणों पर मुख्य निर्देश

- **स्पीड गवर्नर (नियम 118):** अत्यधिक गति को रोकने के लिए गति-सीमित उपकरणों को अनिवार्य करता है।
- **वाहन स्थान ट्रैकिंग (VLT) उपकरण:** सरकारी नियंत्रण केंद्रों को वास्तविक समय में स्थान डेटा प्रसारित करने के लिए GPS का उपयोग करता है।
- **आपातकालीन पैनिक बटन:** यात्रियों को चिकित्सा संकट, अपहरण या हाईजैकिंग के दौरान पुलिस या सुरक्षा कमांड केंद्रों को तत्काल अलर्ट भेजने में सक्षम बनाता है।
- **वाहन (VAHAN) एकीकरण:** अधिकारियों द्वारा वास्तविक समय की निगरानी के लिए अनुपालन डेटा को 'वाहन' पोर्टल के साथ एकीकृत किया जाना अनिवार्य है।

केंद्रीय मोटर वाहन (दूसरा संशोधन) नियम, 2026

- **टोल अनुपालन प्रवर्तन:** "अवैतनिक उपयोगकर्ता शुल्क" की परिभाषा को औपचारिक रूप देकर गैर-भुगतान को कम करना और इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह (ETC) दक्षता को बढ़ाना।
- **सेवा प्रतिबंध:** वाहन मालिक द्वारा प्रमुख परिवहन-संबंधित सेवाओं का उपयोग करने से पहले सभी बकाया टोल देय राशि के भुगतान को अनिवार्य करता है।
- **स्वामित्व और फिटनेस ब्लॉक:** यदि टोल भुगतान लंबित है, तो हस्तांतरण के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) जारी करने और फिटनेस प्रमाणपत्र के नवीनीकरण पर रोक लगाता है।
- **वाणिज्यिक परमिट पूर्वापेक्षाएँ:** वाणिज्यिक वाहनों को राष्ट्रीय परमिट के लिए पात्र होने या नवीनीकरण के लिए शून्य बकाया राजमार्ग उपयोगकर्ता शुल्क की आवश्यकता होती है।

- **डिजिटल एकीकरण:** टोल रिकॉर्ड के इलेक्ट्रॉनिक प्रसंस्करण के लिए फॉर्म 28 में संशोधन करता है और बाधा मुक्त, नॉन-स्टॉप राजमार्ग यात्रा के लिए 'मल्टी-लेन फ्री फ्लो' सिस्टम का समर्थन करता् है।

थाईलैंड-कंबोडिया मंदिर विवाद

संदर्भ

थाईलैंड और कंबोडिया के बीच एक विवाद तब उभरा जब थाईलैंड ने अपने प्राचीन स्मारकों की आधिकारिक रजिस्ट्री में कई विवादित मंदिर खंडहरों को शामिल कर लिया।

विवाद के केंद्र में विवादित मंदिर

- **तामोन (Tamone) मंदिर:** थाईलैंड में 'ता मुएन' के रूप में ज्ञात, यह मंदिर दोनों देशों द्वारा दावा किए गए एक संवेदनशील सीमा क्षेत्र में स्थित है।
- **ता क्राबे (Ta Krabey) मंदिर:** थाईलैंड में 'ता क्वाई' कहा जाता है, इस मंदिर ने हाल के वर्षों में कंबोडियाई और थाई दोनों सेनाओं की सैन्य उपस्थिति देखी है।
- **के'नार (K'nar) मंदिर:** थाईलैंड में 'नोंग खाना' के रूप में भी जाना जाता है, यह स्थल 2025 के अंत में सीमा झड़पों के बाद थाई नियंत्रण में आ गया।

विदेशों में भारतीय मूल के महत्वपूर्ण मंदिर

मंदिर	देश	महत्व
अंगकोर वाट	कंबोडिया	मूल रूप से खमेर साम्राज्य के दौरान विष्णु को समर्पित एक हिंदू मंदिर के रूप में निर्मित; बाद में बौद्ध स्थल में परिवर्तित।
प्रम्बानन मंदिर	इंडोनेशिया	दक्षिण-पूर्व एशिया के सबसे बड़े हिंदू मंदिर परिसरों में से एक, जो शिव, विष्णु और ब्रह्मा को समर्पित है।
पशुपतिनाथ मंदिर	नेपाल	भगवान शिव को समर्पित एक प्रमुख हिंदू तीर्थ स्थल।
बाटू गुफाएं	मलेशिया	भगवान मुरुगन से जुड़ा महत्वपूर्ण हिंदू धार्मिक परिसर।
माई सन (My Son) अभयारण्य	वियतनाम	भारतीय सभ्यता और चंपा संस्कृति से प्रभावित प्राचीन हिंदू मंदिर परिसर।
वाट फौ (Wat Phou)	लाओस	शिव को समर्पित खमेर-युग का हिंदू मंदिर और भारतीय धार्मिक परंपराओं से प्रभावित।

समाचार में स्थान: निकोबार द्वीप समूह

संदर्भ

निकोबार द्वीप समूह में — लिटिल निकोबार, मेरोई और मेनचल द्वीपों पर — प्रस्तावित तीन वन्यजीव अभयारण्यों ने निकोबारी जनजातीय परिषद के विरोध को जन्म दिया है।

लिटिल निकोबार द्वीप

- **स्थान:** दक्षिणी निकोबार समूह में ग्रेट निकोबार द्वीप के उत्तर में स्थित द्वीप।
- **प्रस्तावित अभयारण्य:** द्वीप के कुछ हिस्सों को 'लेदरबैक कछुआ अभयारण्य' के रूप में प्रस्तावित किया गया है।
    - लेदरबैक कछुए का प्रमुख प्रजनन स्थल (IUCN: सुभेद्य; WPA 1972: अनुसूची I; CITES परिशिष्ट I)।
- **स्थानिक प्रजातियां:** निकोबार लॉन्ग-टेल्ड मकाक (IUCN: सुभेद्य; WPA: अनुसूची I) और निकोबार ट्री श्रू (tree shrew) जैसे स्थानिक जीवों का समर्थन करता है।
- **जनजातीय महत्व:** बहुआ, मु्ुहिनकोइन और कियांग जैसे गाँवों में पारंपरिक निकोबारी बस्तियाँ और वृक्षारोपण क्षेत्र स्थित हैं।

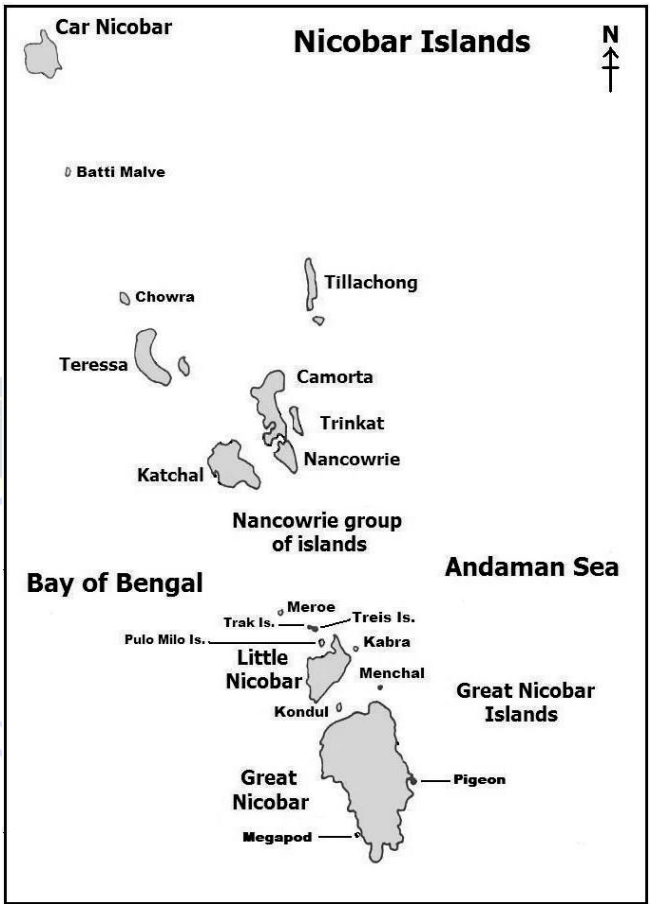

मेनचल द्वीप

- **स्थान:** दक्षिणी निकोबार द्वीपसमूह में ग्रेट निकोबार के पास स्थित छोटा द्वीप।
- **प्रस्तावित अभयारण्य:** पूरे द्वीप को 'मेगापोड अभयारण्य' के रूप में प्रस्तावित किया गया है।
- **मेगापोड (निकोबार स्क्रबफाउल):** (IUCN: सुभेद्य; WPA: अनुसूची I), केवल निकोबार द्वीप समूह में पाया जाने वाला एक स्थानिक टीला बनाने वाला (mound-building) पक्षी।
    - **पक्षी का अनूठा व्यवहार:** निकोबार मेगापोड अंडों को सीधे सेने के बजाय रेत और वनस्पतियों का उपयोग करके ऊष्मायन टीले (incubation mounds) बनाते हैं।

मेरोई द्वीप

- **स्थान:** निकोबार समूह में ग्रेट निकोबार के उत्तर में और मेनचल द्वीप के करीब स्थित द्वीप।
- **प्रस्तावित अभयारण्य:** पूरे द्वीप को 'कोरल अभयारण्य' के रूप में प्रस्तावित किया गया है।
- **समुद्री महत्व:** निकोबार रीफ पारिस्थितिक तंत्र से जुड़ी रीफ मछली, क्रस्टेशियंस और समुद्री कछुओं जैसी समुद्री प्रजातियों का समर्थन करता है।
- **सांस्कृतिक महत्व:** निकोबारी पारंपरिक विश्वास प्रणालियों में पूर्वजों की आत्माओं से जुड़े एक पवित्र द्वीप के रूप में माना जाता है।

व्यापक पारिस्थितिक महत्व

- **ग्रेट निकोबार बायोस्फीयर रिजर्व:** ये द्वीप ग्रेट निकोबार बायोस्फीयर रिजर्व (UNESCO MAB रिजर्व) से जुड़े पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील निकोबार परिदृश्य का हिस्सा हैं।
- **जैव विविधता हॉटस्पॉट:** यह क्षेत्र डूगोंग (dugong), खारे पानी के मगरमच्छ, रॉबर क्रैब (robber crab) और निकोबार मकाक जैसी स्थानिक और संकटग्रस्त प्रजातियों का समर्थन करता है।

मुख्य परीक्षा

सोने और चांदी पर आयात शुल्क (GOLD AND SILVER IMPORT DUTIES)

संदर्भ

भारत सरकार ने पश्चिम एशिया संकट से उत्पन्न आर्थिक दबाव के बीच बहुमूल्य धातुओं के आयात को नियंत्रित करने और विदेशी मुद्रा भंडार की रक्षा के लिए सोने, चांदी और प्लैटिनम पर आयात शुल्क में भारी वृद्धि की है।

नई शुल्क संरचनाएं

- **सोना और चांदी:** प्रभावी सीमा शुल्क को 6% से बढ़ाकर **15%** कर दिया गया है।
- **संबंधित उत्पाद:** अब सोने और चांदी के डोरे (doré), सिक्कों और आभूषण के घटकों पर भी उच्च शुल्क लागू होंगे।
- **प्लैटिनम:** बहुमूल्य धातुओं के आयात बिल को कम करने के इस व्यापक प्रयास के हिस्से के रूप में प्लैटिनम पर शुल्क में भी वृद्धि की गई है।

यह क्यों आवश्यक था?

- **पश्चिम एशिया संघर्ष:** भू-राजनीतिक तनाव के कारण कच्चे तेल की कीमतों में उछाल आया है और होर्मुज जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) में शिपिंग मार्गों के लिए खतरा पैदा हो गया है, जिससे भारत के अनिवार्य ऊर्जा आयात बिल में भारी वृद्धि हुई है।
- **विदेशी मुद्रा भंडार (Forex Reserve) में गिरावट:** संघर्ष शुरू होने के बाद से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में महत्वपूर्ण गिरावट आई है, जिससे बढ़ती लागतों के प्रबंधन की क्षमता पर चिंताएं बढ़ गई हैं।
- **अनिवार्य वस्तुओं को प्राथमिकता देना:** बहुमूल्य धातुओं को विवेकाधीन आयात के रूप में वर्गीकृत किया गया है। शुल्क वृद्धि यह सुनिश्चित करती है कि सीमित विदेशी मुद्रा को कच्चे तेल, उर्वरक, रक्षा उपकरण और औद्योगिक कच्चे माल जैसी "**महत्वपूर्ण आवश्यकताओं**" के लिए संरक्षित किया जाए।

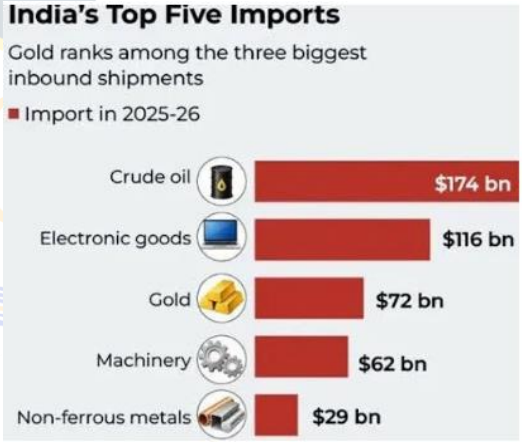

नीति में बदलाव का प्रभाव

घरेलू बाजार और उपभोक्ता

- **खुदरा कीमतों में वृद्धि:** ज्वेलर्स द्वारा बढ़ी हुई लैंडेड लागत (landed cost) का भार सीधे खरीदारों पर डालने की उम्मीद है, जिससे आभूषण और बुलियन (bullion) काफी महंगे हो जाएंगे।
- **तत्काल बाजार अस्थिरता:** घोषणा के बाद, घरेलू कमोडिटी बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में तेज उछाल देखा गया।
- **उद्योग के लिए झटका:** यह कदम उन पिछले नीतिगत प्रयासों को उलट देता है जिनका उद्देश्य रत्न और आभूषण उद्योग का समर्थन करना और कम शुल्क के माध्यम से तस्करी को हतोत्साहित करना था।

मैक्रोइकॉनॉमिक संकेतक

- **रुपये का स्थिरीकरण:** सोना खरीदने के लिए उपयोग किए जाने वाले अमेरिकी डॉलर की मांग को कम करके, सरकार को रुपये पर दबाव कम करने की उम्मीद है, जो हाल ही में रिकॉर्ड निचले स्तर तक गिर गया था।

- **चालू खाता घाटा (CAD):** सोने के आयात को नियंत्रित करना, जिसे एक प्रमुख "डॉलर ड्रेन" माना जाता है, व्यापार और चालू खाता घाटे को और अधिक बढ़ने से रोकने के उद्देश्य से है।
- **मुद्रास्फीति नियंत्रण:** जबकि घरेलू सोने की कीमतें बढ़ती हैं, मुद्रा को स्थिर करने से उच्च ऊर्जा लागत के कारण होने वाली व्यापक "आयातित मुद्रास्फीति" को कम करने में मदद मिल सकती है।

भारत का आयात परिदृश्य

श्रेणी	स्थिति एवं प्रभाव
सोने की मांग	भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है; आयात पर निर्भरता लगभग पूर्ण है।
ऊर्जा निर्भरता	भारत अपने कच्चे तेल और एलपीजी का विशाल बहुमत आयात करता है, जिसका बड़ा हिस्सा खाड़ी क्षेत्र से होकर गुजरता है।
आयात बिल की प्रवृत्ति	वैश्विक स्तर पर उच्च कीमतों के कारण 2025–26 में सोने का आयात बिल बढ़ गया, जबकि भौतिक मात्रा कम थी।

आगे की राह

- **वित्तीयकरण को बढ़ावा देना:** भौतिक सोने की मांग को वित्तीय साधनों की ओर मोड़ने के लिए **सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (SGB)** योजना को मजबूत करना, जिससे भौतिक आयात की आवश्यकता कम हो सके।
- **ऊर्जा विविधीकरण:** आयातित कच्चे तेल पर संरचनात्मक निर्भरता को कम करने के लिए हाल ही में किए गए मितव्ययिता के आह्वान के अनुसार सार्वजनिक परिवहन और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की ओर संक्रमण को तेज करना।
- **तस्करी की निगरानी बढ़ाना:** चूंकि उच्च शुल्क अवैध व्यापार को प्रोत्साहित कर सकते हैं, इसलिए सरकार को सीमाओं पर सतर्कता बढ़ानी चाहिए और **राजस्व खुफिया निदेशालय (DRI)** की प्रवर्तन क्षमताओं को मजबूत करना चाहिए।
- **पुनर्चक्रण (Recycling) प्रोत्साहन:** अप्रयुक्त घरेलू सोने को वापस चक्रीय अर्थव्यवस्था में लाने के लिए **स्वर्ण मुद्रीकरण योजना** की दक्षता में सुधार करना, जिससे नए आयात पर निर्भरता कम हो सके।

भारत के कृषि-निर्यात में उछाल(INDIA'S AGRI-EXPORT SURGE)

संदर्भ

वित्तीय वर्ष 2025-26 भारतीय कृषि के लिए एक ऐतिहासिक अवधि के रूप में उभरा है। ट्रंप प्रशासन के तहत अधिक संरक्षणवादी संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा उत्पन्न भू-राजनीतिक और आर्थिक प्रतिकूलताओं के बावजूद, भारत के कृषि क्षेत्र ने उल्लेखनीय चपलता प्रदर्शित की है।

फैक्टशीट

- **कुल कृषि-निर्यात:** $53.1 बिलियन (वर्ष-दर-वर्ष 2.3% की वृद्धि)।
- **विकास मानदंड:** कृषि-निर्यात ने भारत के समग्र वस्तु निर्यात विकास (0.9%) को पीछे छोड़ दिया।
- **बाजार परिवर्तन**: अमेरिका को होने वाले समुद्री निर्यात में $400 मिलियन की गिरावट आई, जबकि चीन और वियतनाम को होने वाले निर्यात में $660 मिलियन से अधिक की संयुक्त वृद्धि हुई।
- **प्रमुख प्रदर्शनकर्ता (Star Performers):**
  - समुद्री उत्पाद: $8.4 बिलियन (13.9% की वृद्धि)।
  - भैंस का मांस: $5.1 बिलियन (25.6% की वृद्धि – एक नया रिकॉर्ड)।

○ कॉफी: $2.0 बिलियन से अधिक (2020-21 के बाद से लगभग तीन गुना)।

- **आयात संकेंद्रण**: वनस्पति तेल शीर्ष आयात ($19.5 बिलियन) बना रहा, जिसके बाद दालें ($3.6 बिलियन) रहीं।

अमेरिकी टैरिफ के बावजूद कृषि निर्यात क्यों बढ़ा?

- **आक्रामक बाजार विविधीकरण:** जब अमेरिका ने टैरिफ लगाया (जो स्थिर होकर 10% पर आने से पहले 50% के चरम पर पहुँच गया था), भारतीय निर्यातकों ने नीति परिवर्तन का इंतजार नहीं किया। समुद्री निर्यातकों ने दक्षिण-पूर्व एशिया (वियतनाम, थाईलैंड) और यूरोप (बेल्जियम, इटली) की ओर रुख किया, जिससे "ट्रंप शॉक" का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया जा सका।
- **वैश्विक आपूर्ति आघातों (Supply Shocks) का लाभ उठाना:** भारत का कॉफी निर्यात इसलिए बढ़ा क्योंकि ब्राजील (अरेबिका) और वियतनाम (रोबस्टा) जैसे प्रमुख प्रतिस्पर्धियों को खराब फसल का सामना करना पड़ा। भारत ने यूरोपीय और रूसी बाजारों की मांग को पूरा करने के लिए कदम आगे बढ़ाया।
- **उभरते बाजारों में रणनीतिक मांग:** भैंस के मांस उद्योग ने मिस्र, वियतनाम और पश्चिम एशियाई देशों की उच्च मांग का लाभ उठाया। उज्बेकिस्तान जैसे नए बाजारों में सिर्फ एक साल में $97 मिलियन से $307 मिलियन की भारी उछाल देखी गई।
- **अनुकूल वस्तु कीमतें:** विशिष्ट वस्तुओं के लिए उच्च वैश्विक कीमतों ने मूल्य वृद्धि को बनाए रखने में मदद की, भले ही कुछ क्षेत्रों में मात्रात्मक वृद्धि मामूली थी।

लगातार चुनौतियाँ

- **"ट्री नट" (Tree Nut) निर्भरता:** भारत ताजे फल और नट्स के आयात (बादाम/अखरोट) के लिए अमेरिका पर बहुत अधिक निर्भर है, जिसके मूल्य में $1.4 बिलियन की वृद्धि देखी गई, जिससे उस विशिष्ट उप-क्षेत्र में व्यापार संतुलन बिगड़ गया।
- **पारंपरिक मुख्य वस्तुओं में गिरावट:** बासमती चावल, मसालों और प्रसंस्कृत फल/सब्जियों के निर्यात में वास्तव में गिरावट आई है, जो यह दर्शाता है कि टैरिफ का प्रभाव इन उच्च-मूल्य वाली, ब्रांडेड श्रेणियों में अधिक महसूस किया गया।
- **आयात संवेदनशीलता:** भारत अभी भी खाद्य तेलों और दालों में आत्मनिर्भरता की कमी का सामना कर रहा है, और अपनी तेल मांग का केवल 40% ही घरेलू स्तर पर पूरा करता है। यह अर्थव्यवस्था को वैश्विक मूल्य अस्थिरता के प्रति संवेदनशील बनाता है।
- **कपास संकट:** कभी एक प्रमुख निर्यातक रहा भारत अब कच्चे कपास के आयात में उछाल देख रहा है, जो वैश्विक कपड़ा आवश्यकताओं की तुलना में घरेलू उपज या गुणवत्ता में संभावित गिरावट का संकेत देता है।

आगे की राह: 2027 और उससे आगे के लिए रोडमैप

- **मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करना:** प्राथमिक वस्तुओं पर सीधे टैरिफ आघात से निर्यात को बचाने के लिए कच्चे माल के बजाय प्रसंस्कृत कृषि-उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करना।
- **"लुक ईस्ट" नीति का विस्तार:** चीन और वियतनाम में सफलता को देखते हुए, भारत को पश्चिमी संरक्षणवाद के खिलाफ एक स्थायी सुरक्षा कवच (buffer) बनाने के लिए आसियान (ASEAN) देशों के साथ गहरे कृषि व्यापार समझौतों को औपचारिक रूप देना चाहिए।
- **खाद्य तेल और दालों में निवेश:** $23 बिलियन के विशाल आयात बिल को कम करने के लिए, "आत्मनिर्भरता" (Atmanirbharta) हेतु घरेलू तिलहन उत्पादन के लिए मिशन-मोड दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।
- **लॉजिस्टिक और कोल्ड चेन इंफ्रास्ट्रक्चर:** समुद्री और ताजे उत्पादों में रिकॉर्ड-तोड़ प्रदर्शन को बनाए रखने के लिए, भारत को बर्बादी को कम करने और यूरोपीय संघ एवं जापान के कड़े पादप-स्वच्छता मानकों (phytosanitary standards) को पूरा करने के लिए बंदरगाहों पर अत्याधुनिक कोल्ड स्टोरेज में निवेश करना चाहिए।

- **कपास का पुनरुद्धार:** फाइबर का शुद्ध आयातक बनने की प्रवृत्ति को उलटने के लिए उच्च उपज देने वाली, कीट-प्रतिरोधी कपास की किस्मों पर शोध की आवश्यकता है।